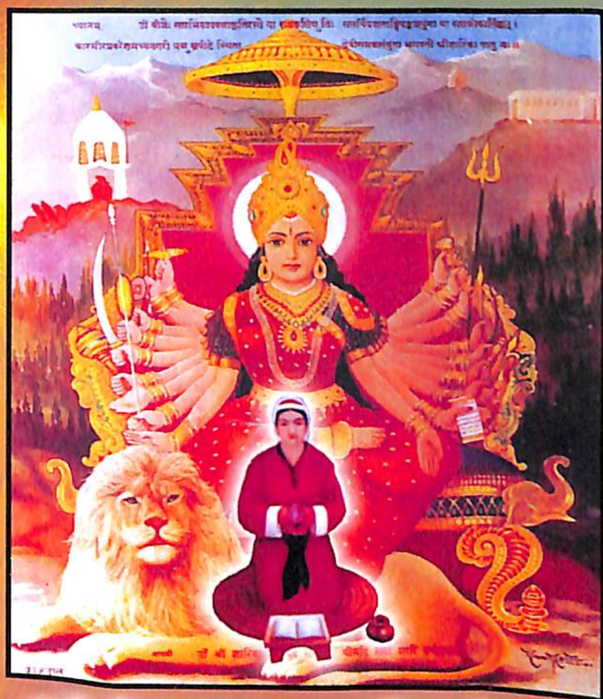
शारिका देवी अंशरूप माता रूप भवानी (संक्षिप्त)



आविर्भूता जनक तपसा शारिका अंशरूपा
ध्वान्तं भित्वा सकल-जगतो यागतासीत्समक्षम।
भक्तानाञ्च प्रवर—सुखदामा गतानां समीपे
वन्दे नित्यं विकसितमुखीं रूपनाम्नीं भवानीम्।।

लेखक: ब्रिज लाल दर
तालाब तिल्लो, जम्मू-2







शारिका देवी अंशरूप माता रूप भवानी

(वास्तविकता)



सर्वअधिकार सुरक्षित

लेखक : **ब्रिज लाल दर "दीन"**
4/71 गोल पुली
तालाब तिलो, जम्मू

मूल्य : 20/-

पहला संस्करण

मुद्रक : दुर्गा प्रेस

भूमिका

कई विचारकों और लेखकों ने माता रूपभवानी के बारे में समय समय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं जो उनके आध्यात्मिक जीवन, चमत्कार तथा उपदेशों से सम्बन्धित हैं। अधिकतर इन प्रकाशनों में उनके रहस्यमय उपदेश अर्थात वारव्, उनका अर्थ तथा व्याख्या का उल्लेख है। इसी संदर्भ में कुछ वर्ष पहले मैंने अपनी जानकारी और योग्यता अनुसार उनका जीवन चरित लिखने का प्रयास किया है ताकि साधारण लोग उनके आध्यत्मिक जीवन से परिचित हों। ऐसे सब प्रकाशन श्री अलख साहिबा ट्रस्ट तीर्थनगर बोड़ी रोड जम्मू से उपलब्ध है।

इस बार मेरे मन को एक नई प्रेरणा मिली कि मैं उस वास्तविकता की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करूँ जिस कारण से शारिका देवी मनुष्य रूप धारण करके संत माधव जू दर के घर सुपुत्री बनकर जन्म लेती हैं। कई लोग उसको संत या तपस्विनी मानते हैं जब कई उसको महा कवयित्री समझते हैं। जब बहुत कम यह जानते होंगे कि वह शारिका का अंश रूप थीं। खैर धारणाएँ भिन्न हो सकती हैं। हालांकि काफी सारे लोगों



में उनके प्रति श्रद्धा और भावना स्पष्ट हैं। इन सभी धारणाओं और भक्तों की भावना का ध्यान रखकर मेरा अब यहाँ प्रयास है कि मैं घटनाओं और मुख्य विचारको के लेखनीय का सहारा लेकर यह संक्षिप्त वर्णन करूँ कि माता रूप भवानी का जन्म श्री शारिका देवी का अंश रूप था जिसमें न कोई संदेह है न कोई अत्युक्ति। मैं कोई वरिष्ठ लेखक नहीं हूँ न ही कोई आलोचक किन्तु इतना जरूर है कि मिली प्रेरणा और प्राप्त जानकारी लोगों के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूँ। निर्णय आपके हाथ हैं। हां यदि लेखनीय में किसी प्रकार की त्रुटि या कमी का अनुभव हो जाए उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

धन्यवाद।

लेखक

श्री गुरवे नमः

पूज्य पिता मेरे गुरूवर उनका आसरा मेरे सिर पर।
निज जीवन को सफल बनाना, आर्शीवाद है उनका मुझ पर।

धर्म कर्म का सदा सबको, उसने पाठ पढ़ाया है।
पुण्य और सत्य पर निष्ठा रखना, उसने मुझे सिखाया है।

जप तप में समय बिताना, उसका तो अभ्यास रहा।
शुभ कर्मों को करते रहना उनका जीवन आधार रहा।।

उस गुरू के चरणों में अब अपना, शीष झुकाऊँ मैं।
नये यत्न में सफलता का, बस आशीष पावों मैं।

ब्रिज (दीन)

अशंरूप – तात्पर्य

शारिका देवी अंशरूप "माता रूपभवानी"

भाग–1

तात्पर्य : जब से यह सृष्टि रची गई है इसका रचयिता कौन है, कौन इसका संचालन करता है। क्या यह ब्रह्मा, विष्णू, महेश ही हैं जो इसका कर्ता, पालक और संहारक हैं । यदि ऐसा है तो उनका स्वरूप कैसा है? ऐसे कई प्रश्न साधारण मानव के मन में उमड़ते रहते हैं। आज तक युग–युग में कितने ही श्रेष्ठ ऋषि मुनि गुज़रे हैं। सबने अपने–अपने अनुभव अनुसार इस विषय की व्याख्या की है। इसके अतिरिक्त साहित्य का क्षेत्र हमारा विशाल है। वेद, उपनिषद, दर्शन, महाकाव्य आदि ग्रन्थ ज्ञान अनुभव तथा आध्यामिकता की विशालता से भरपूर है किन्तु ईश्वर या देवी के अस्तित्व की गुत्थी स्पष्ट रूप से सुलझी नहीं है। यहाँ तक कि महात्मा गौतम बुद्ध भी कठोर तप करने के बाद तथा दिव्य प्रकाश प्राप्ति के बाद भी इस विषय पर अन्ततः मौन ही रहे।

खैर कुछ भी हो एक बात तो अटल है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है। कोई अध्यात्मिक तेज़ या प्रकाश है जो इस समस्त सृष्टि अथवा ब्रह्मण्ड का स्वामी है।

यही शक्ति या प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है निराकार है, साकार भी है। जो भी प्राणी जिस भाव से इस ताकत पर दृढ़ता रखता हैं, वैसा ही उसी भाव से उसे इसकी प्राप्ति होती है। जैसे कई सूर्य की पूजा करतें हैं, कई पत्थर की और, कई विशिष्ठ पेड़ की आदि। जड़ हो ये चेतन अपना अपना विश्वास और अपनी अपनी धारणा। जो व्यर्थ नहीं है। अन्यथा न पत्थर में ईश्वर है न पेड़ में दिव्य शक्ति। ये तो केवल मन की एकाग्रता, ध्यान की स्थिरता अथवा साधना में लीनता का एक सहज पथ है। हाँ हर भाव में शुद्ध दृढ़ता और साधना अभ्यास चाहिए। वरन् उसका न कोई रूप है न स्वरूप। वह द्वैतवाद से भी प्राप्त है और अद्वैतवाद से भी। इसी प्रकार निराकार भाव या साकार भाव से प्राप्त हो सकते हैं।

समय–समय या भिन्न–भिन्न काल में कई सुविख्यात कवि, लेखक और विचारक हुए हैं यदि हम उनके कथन और लेखनीय पर खोजपूर्ण विचार करें तो यह मूल तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है कि शक्ति या प्रकाश सर्वत्र है, सर्व–व्यापक है और सर्वश्रेष्ठ है। अभ्यास से ही इसका आभास हो सकता है।

संकेत :– (सत कवियों का लेखन)



क) घट घट में है साई रमता
कटुक वचन मत बोल रे।

ख) बड़े प्रेम से मिलना सब से
दुनिया में इन्सान रे।
ना जाने किस वेश में बाबा
मिल जाए भगवान रे।

ग) लाली मेरे लाल की
जित देखूँ तित लाल।
लालन देखन में गई
मैं भी हो गई लाल।

घ) संतोष समाद एक आसन पर
मैं यूं लगाया प्रयम का पथ।
द्रड किया बालवाशी आंखियों का।
ज्योति स्वरूपा क्या करूँ मेरे में तेरे का
सूक्ष्म रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में बसाया।

ङ. कौन जाने तेरा स्वभाव
प्रभाव परमानन्द जी
जो स्मरे हृदय में पावे
जैसी प्रभा भास्करा जी

वक्य मजरी –93

च. आदम को खुदा मत कहो
आदम खुदा नहीं।
लेकिन खुदा के नूर से
आदम जुदा नहीं।।

इस सृष्ठि पर राम और श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। वह तो युग अवतार के रूप में हुआ है। लम्बे युग में समय की पुकार थी कारण अनेक थे। नहीं तो राम या कृष्ण का मनुष्य रूप ही वास्तविक ईश्वर रूप नहीं है। अपितु उसकाल में युग अवतार के रूप में साकार हुए। श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय चार श्लोक संख्या सात में श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है कि जब जब धर्म का पतन या अधर्म की चर्म सीमा आ जाती है तो धर्म स्थापना तथा साधु पुरूषों के उधार आदि के लिए मैं (कृष्ण) पृथ्वी पर अवश्य प्रकट होता हूँ। जैसे :–



यदा यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिःर्भवति, भारत।
अभ्युत्थानम अधर्मस्य, तदा आत्मानम स्त्रृजांमि अहम"
परित्रानाय, साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम
धर्म संस्थापनाथाय, संभवामि युगे युगें।

अर्थ :– भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं :– हे भारत जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है। तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात प्रकट होता हूँ क्योंकि साधु–पुरूषों का उद्धार और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए और धर्म स्थापन करने के लिए ही मैं युग युग में प्रकट होता हूँ।

लिखने का तात्पर्य है कि शक्ति या प्रकाश कभी भी किसी रूप में प्रकट हो सकती है। युग अवतार तो विशिष्ट कारणों से और निश्चित समय पर ही होता है। जब कि भक्त या साधक के निरन्तर दृढ़ पुकार पर भी यथा समय उसका साकार होना असंभव नहीं है वही अंशरूप भी कहा जा सकता है।

इस प्रकार शारिका देवी भी एक शक्ति स्वरूप हैं। शक्ति का ही नाम है। श्रीनगर के चक्रेश्वर हारी पर्वत पर उनका पीठ अब भी प्रसिद्ध है जिसे शारिका पीठ या शक्ति पीठ से भी मान्यता है।

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चकोप.शोमिताम।
पीठेश्वरी शिला रूपां शारिका प्रणमाम्यहम।।

यही शक्ति एक दृढ़ भक्त के लिए कैसे साकार हुई उसी का तथ्य सहित विवरण आगे दुसरे भाग में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता हूँ। दोनों भागों का आध्यात्मिक अध्यन हो, यही मेरी सविनय प्रार्थना है। आशा करता हूँ इससे आपका विश्वास अटल होगा तथा भावना स्थिर।

भाग – 2
भूगोलिक परिस्थित

काश्मीर प्रान्त भूगोलिक दृष्टिकोण से प्रकृति की हमें विशेष देन है जिस कारण इसका नाम विख्यात रहा है। स्थानीय भूगोल (टोपोग्राफी) से साफ विदित है कि इसकी सुन्दरता क्योंकर इतनी आकर्षित रही है। चारों ओर छोटे बड़े पर्वतों के बीच यह रमणीय घाटी बसी है जिसका इतिहास में अपना स्थान है। यहाँ के सभी पहाड़ घने जंगलों से भरे हैं जबकि कितने ही नदी नाले तथा चश्में, झरनें, घाटी की शोभा को चार चांद लगाते हैं। हालांकि हम सब जानतें हैं कि पहले कई दशकों से यहाँ की इस प्राकृतिक संपदा को काफी हानी पहुँची है तथा परिस्थितयों में भी बदलाव आया है फिर भी ऐसे स्थानों या क्षेत्रों का वातावरण शान्त होना स्वभाविक है जो आध्यात्मिक ज्ञान, तप, जप अथवा साधना के लिए अनुकूल होता है। यह इसी विशेषता का परिणाम है कि काश्मीर ऋषियों–मुनियों की भूमि रह चुकी है। महान कश्यप ऋषि का यहाँ पर ही तपस्थल तथा साधना केन्द्र रहा है और इसी ऋषि के नाम पर इस क्षेत्र का नाम कश्यपमर पड़ा था जो आगे चल कर काश्मीर शब्द बन गया।

परिचय : इसी संदर्भ में आज से लगभग चार सौ वर्ष पहले श्रीनगर के नवाकदल इलाके में माधव जू दर एक उच्चकोटि

के संत हुए हैं जो शारिका देवी का परम उपासक था। हारी पर्वत और चक्रेश्वर का नित्य परिक्रमा करते थे और साथ–साथ निरन्तर द्रडता से जप तप का अभ्यास भी करते रहे। इनकी यह साधना अनथक चौदह साल तक चलती रही जिसे वह शारीरिक रूप से दुर्बल भी हुए। किन्तु निश्चय अटल। अतं में इनकी यह अटल भक्ति रंग लाईं। एक शुभ दिन, हारी पर्वत का परिक्रमा करते करते शारिका देवी उनके सामने साक्षात्कार हो जाती हैं। अपने भक्त की साधना से प्रसन्न होकर उसे मनोरथ प्रकट करने के लिए कहती हैं। दण्डवत प्रणाम करके हर्षित मन से माधव जू दर ने उन से प्रार्थना की कि हे माता आप मेरे घर सुपुत्री बन कर जन्म लें। परन्तु इस पर माता भवानी ने उसको संसार के सभी सुख ऐश्वर्य का प्रलोभन दिया जो उस भक्त ने ठुकरा दिया। वह अपनी एकमात्र कामना पर अटल रहा और कहा कि मुझे संसारिक विषय भोगों की कोई लालसा नहीं और न ही इसकी आवश्यकता है। मेरे मन में आदि से एक कामना थी और वही अब भी है वह मैने विनती करली। इसके आगे मेरी कोई अभिलाषा नहीं। आप स्वीकार करें या न करें। अपने भक्त की इस प्रकार स्थिर भावना देखर भवानी तथास्तु कहकर अदृश्य हुईं।

कुछ समय बीतने के उपरान्त सन् 1621 ई० तदानुसार

1677 बिक्रमी के जेष्ठ पूर्णिमाशी के दिन पर माधवजू दर के घर एक कन्या जन्म लेती है जिसका नाम रुफ रखा गया जो आगे चलकर रूपभवानी के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह कन्या काफी छोटी आयु से ही साधना आरम्भ कर लेती है और दस ग्यारह वर्ष की आयु से घर बार छोड़कर भिन्न–भिन्न स्थलों पर तपस्या कर लेती है। तपस्या के वर्षो में ही इन्होंने ज्ञान, निर्वाण, योग आदि कई प्रसंगों और विषयों पर अपने सेवकों और अनुयायों को अनमोल उपदेश दिए। ऐसे ज्ञानपूर्वक उपदेश के श्लोकों को रहस्य उपदेश से आजकल जाना जाता है। हिन्दु मुसलमान सभी इन से प्रभावित थे और परिणामस्वरूप अनेक भवानी के सेवक और अनुयायी बनें। यह सारा वृतान्त विस्तारपूर्वक भवानी के जीवन चरित पुस्तक में आया है।

रूपभवानी का मानव रूप अवश्य था किन्तु वास्तविक रहस्य कुछ और ही था जो स्वयं उन्हें या उनके पिता माधव जू दर तक ही सीमित था। उन्होंने कौन सा घर गृहस्थी चलानी थी या भौतिक बन्धनों से प्रभावित होना था। केवल सुद्रढ़ भक्त के अटल भक्ति भाव के कारण उनको अंश रूप धारण करना पड़ा। मनुष्य जन्म लेने पर जीवन के कुछ ही वर्ष उन्होंने संसारिक रीति अनुसार निभाए जो केवल एक व्यवहारिकता थी और आवश्यकता भी क्योंकि मनुष्य लोक की अपनी मर्यादा है। इस प्रकार

जीवन के कुछ वर्ष व्यवहारिकता के साथ निभाने के तुरन्त बाद वह बचपन से ही घर त्याग कर पहाडों और जंगलों में अधिकतम जीवन काल बिताती है अर्न्तध्यान होने के कुछ वर्ष पहिले श्रीनगर लौटती है। वरन् देवी का इन संसारिकता से क्या प्रयोजन। उसका न कहीं आदि न कही अन्त। न कही जन्म, न कहीं मरण। ऐसे रहस्यपूर्ण ज्ञान का उन्होंने स्वयं अपने वाखो (श्लोकों) में भी संकेत दिया है। जैसे

न जाया न जन्मी दग्द कर्मकाण्डी
यथा शान्त बस्मी अरूपा स्वरूपम।
सूह सर्वत्र सुखी अदेहो समादि
अमोह सावदानं तथ निष्कल निराकार।
अर्न्तमुखी द्रष्टी निर्वाण–रहस्यतती परम गती।।

अर्थ :–न पैदा हुई, न विवाह हुआ, सभी कर्म–परिणामों को स्वाहा कर दिया। शांत भस्म की भांति स्वरूप अरूप सा है। वही सर्वत्र सुखी है जो शरीर की कल्पना किए बिना समाधिस्थ है। ईश्वर के निराकार रूप का मोह त्याग कर सावधानी पूर्वक भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टान्त होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

साभार : कौन जाने तेरा स्वभाव।

इस तरह यहां दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं कि भक्ति



में कितना बल है और फल भी। भक्ति में ही शक्ति है। इसी भक्ति का मान रखने के लिए भक्त माधव जू के हठ करने पर शारिका देवी अल्पस्थायी मनुष्य रूप लेने पर विवश हो जाती हैं। इसी सच्चाई के साथ दूसरी बात यह भी स्पष्ट हो जाती है कि रूपभवानी कोई साधारण मनुष्य न थी अपितु शारिका माता का अंशरूप।

अंश असंख्य हैं। इनकी कोई गिनती नहीं की जा सकती है। यथा आवश्यकता कभी भी कोई रूप धारण करना संभव है, क्योंकि ब्रह्मशक्ति प्रकाश या तेज़ ही तो है। जिस प्रकार सूय प्रकाश की किरणें अनेक हैं जहां भी और जब भी खुले आकाश में सूर्य की ओर देखने का यत्न करते हैं तो छोटी बड़ी अनगिनित किरणें ही नज़र आती हैं। अतः ऐसे गूढ़ रहस्य पर चिन्तन और मनन चाहिए।

पाठकों से सविनय अनुरोध है कि वे रहस्यमयता पर गूढ़ता से मंथन और मनन करें ताकि आध्यात्मिक तथ्य की जानकारी प्राप्त हो।

माता रूपभवानी युग अवतार नहीं थी केवल कारणवश शारिका देवी अंशरूप। यह बात पहले स्पष्ट की गई है कि युगावतार का कोई निश्चित समय होता है और विशेष प्रयोजन। जैसे जब दुष्कर्म, अधर्म अथवा घोर अशान्ति आदि अपनी पराकाष्ठ पर जाते हैं तो ऐसे हालातों में समय–समय पर युग अवतार सुधार के लिए जन्म लेता है

अर्थात प्रकृति हस्ताक्षेप करके यथा आवश्यकता सुधार और शान्ति की स्थिरता लाती हैं किन्तु जिस काल के घटनाक्रम का यहाँ उल्लेख हो रहा है उस काल की ऐसी मांग न थी। श्रीराम, श्रीकृष्ण या महात्मा बुद्ध का जन्म युगावतार से सम्बन्धित था क्योंकि उन कालों के हालात इस बात को स्वतः सिद्ध करतें है। इस प्रकार माता रूपभावानी का जन्म युगावतार से सम्बन्यित नहीं है।

कुछ प्रमाणिक तथ्य : यहाँ यह लिखना आवश्यक हो जाता है कि रूपभवानी अपनी ख्याति या प्रचार तनिक न चाहती थीं। केवल अपनी जानकारी अपने सेवको या अनुयायों तक ही सीमित रखना चाहती थीं। इसी अभिप्राय से वह अपने तपस्थल बदलती रहीं और वह भी पहाड़ी और वनक्षेत्रों में। कारण, जहाँ भी अपना स्थल बनाती थीं तो थोड़े समय के बाद से ही लोगों का वहाँ आना जाना लगता था और तेजी से इनकी प्रसिद्धता फैल जाती थी, न चाहने के बाद भी। उन्होंने कारणवश जन्म लेने का प्रयोजन पूरा किया था अब केवल मनुष्य रूप जीवन समय बिताना था, कोई ख्याति या प्रचार नहीं।

रूपभवानी के जीवनकाल के दौरान काश्मीर में कई उच्च्कोटि के संत, सोफी प्रसिद्ध थे जो अपनी आध्यात्मिक ज्ञान की पराकाष्टा पर पहुँच चुके थे। जैसे स्वामी ऋषि

पीर साहब या शाह सादिक कलन्दर आदि। ऐसे संतों का वर्णन अलग–अलग पुस्तकों में प्रकाशित भी हो चुका है। रूपभवानी की इन महान संतों से भेंट भी हुई थी और वह रूपभवानी की शक्ति से परिचित हो चुके थे तथा उसके जन्म लेने की वास्तविकता को जान गए थे जिसके बिना पर वे भवानी को काफी सम्मान करते थे। यहाँ तक कि लार गांव के पहाड़ी पर भवानी और शाहकलन्दर के बीच ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति का परीक्षण तथा वाद–विवाद होने के बाद शाह सादिक कलन्दर अपने साधना स्थल से उठकर वहाँ पर माता रूपभवानी को बैठने का विनयपूर्वक अनुरोध करता है जो वह स्वीकार करती है। इससे पहले तो शाह सदिक ऊपरी पहाड़ी डलवाल पर ही साधना लीन रहता था तथा अपनी आध्यात्मिक शक्ति पर काफी गर्व था। जबकि भवानी निचंले डलवान पर तप करती थी।

यदि हम कई लेखकों की रचनाओं अथवा टिपणियों की ओर कुछ ध्यान दें तो रूपभवानी के जीवन या उपदेशें से सम्बन्धित हैं तो हमारे विश्वास में और भी दृढ़ता आती कि भवानी, शारिका देवी का ही अंश रूप थीं। ऐसे लेखकों में मुख्य नाम इस प्रकार हैं :–

1. डॉ० चमन लाल रैना — Mystic Reveletion (अंग्रेजी भाषा),
2. श्री श्यामलाल दर — कौन जाने तेरा स्वभाव

सत्येश दर

3. पं० रघुनाथ दर — सवानिहयात रूपभवानी (उर्दू भाषा में)

4. श्री मोती लाल साकी — शारिका लहरी में परिचय लेख

5. ब्रिज लाल दर — जीवन चरित रूप भवानी

इसके अतिरिक्त भी कई अन्य व्यक्तियों और लेखकों ने पूर्व लिखित दृष्टिकोण को दोहराया है।

अपने तपस्या काल में भवानी ने कितने ही विशेष चमत्कार किए है जिनकी जानकारी से हमें उनकी दैवी शक्ति का स्पष्ट आभास होता है, सुना भी है और पढ़ा भी है। किन्तु उनसे परे हटकर जब हम केवल उनके अर्न्तध्यान होने के दिन या उस के बाद की कुछ घटनाओं पर एक दृष्टि डालें और उनकी गूढ़ता समझे तो पाठक को यह अवश्य अनुभव हो सकता है कि यह किस विचित्रता को दर्शाता है अर्थात क्या प्रमाणित करता है जैसे :—

1. जीवन काल के अन्तिम वर्षों में माता भवानी वासकुरा तप स्थल से अपने जन्म स्थान नवाकदल लौट आती है और अपनी तपस्या बराबर जारी रखी। स्वयं अर्न्तयामी होने के कारण उसे अपने देह त्यागने का ज्ञान था। इसलिए अपने जन्म स्थान आश्रम में लौट कर अब वह अपने परिवार सदस्यों को इस सच्चाई की तरफ ध्यान खींचना चाहती थी। उनसे यह समझाती रही कि यह

शरीर नाशवान है। इसका त्यागना प्राकृतिक नियम है। इसपर किसी प्रकार का दुःख या शौक करना उचित नहीं है।

यह सारा आवागमन का खेल है। इत्यादि.......... इस प्रकार उनको धीरज बंधाती रही और साथ–साथ अपने शरीर त्यागने का भी संकेत देती रही। अन्त में जब निश्चित समय पर भवानी अर्न्तध्यान हो जाती है तो हिन्दु मुसलमान दोनो अपने धर्म अनुसार उनका अंतिम संस्कार करना चाहते थे। वातावरण काफी बिगड़ गया। मुस्लिम समुदाय के लोग काफी इक्ट्ठे हो गए। बढ़ते विवादों की सूचना सरकार तक पहुँच गई और उन्होंने हस्ताक्षेप करने की कोशिश की। इधर दूसरी ओर परिवार के सदस्य भवानी के चरणों पर झुक कर बहुत रोते पीटते रहे। सहम कर आपसे बचाव की प्रार्थना करते रहे। कुछ देर बाद ही माता भवानी पुनः (दुबारा) जीवित हुई। शरीर पर डाली सफेद चादर उठा कर परिवार के लोगों से कहती है आप निश्चित रहो। मेरे शरीर को कोई छू नहीं सकता है। आप अपना कार्यक्रम जारी रखे। इसी बीच उठ खड़ी होकर घर के बाहर इक्ट्ठे दूसरे समुदाय के लोगों से कहती है कि क्या बात है आप अपना समय क्यों ज़ाया कर रहे हो। अपने भाई को बुलाकर उसे रोटियाँ मंगवाई और सब में बंटवाई। वे सब लज्जित होकर अपने अपने घरों को

लौटते गए। बस इतनी देर थी कि एकदम हिमपात हुआ। चलना फिरना कठिन हो गया। अवसर पाकर घर वालों ने क्रिया शुरू की और फिर अर्थी लेकर शमशान की तरफ चल पड़े। वहाँ पहुँचने पर अर्थी को नीचे रखा तो देखा चादर के नीचे कुछ न था केवल कुछ फूल (देहावशेष) ही मिले। सब चकित रह गए। उनका गुणगान करते रहते घर वापिस आये। जरा सोचिये।

2. जब माघमास सप्तमी 1777 (बिक्रमी) के दिन रूप भवानी श्रीनगर जन्म स्थान के तपस्थल पर अन्तर्ध्यान हो जाती हैं, ठीक उसके कुछ दिन पहले उनका एक परम भक्त जिसका नाम नन्दराम था और बाण्डीपुर क्षेत्र का निवासी था। बान्डीपुर से श्रीनगर की तरफ काफी समय के बाद आ रहा था तो चलते चलते उनके मन में विचार आया कि मैं वासकुरा में भवानी का दर्शन करके फिर आगे श्रीनगर की ओर चल पड़ूँ क्योंकि वह काफी समय से उनके दर्शन से वंचित था। उसे यह भी मालूम न था कि भवानी वासकुरा छोड़कर श्रीनगर चली गई थी। कारण उन दिनों यातायात के साधन नाम मात्र थे जबकि बाण्डीपुर पहाड़ी जंगल से भरा दुर्गम क्षेत्र था। यात्रा प्रायः पैदल ही हुआ करती थी या घोड़े पर। खैर भावना से भरा नन्दराम कुछ दिनों में वासकुररा पहुँच पाता है। वहाँ उसे माता रूपभवानी तपस्थल पर ही विराजमान मिलीं। प्रणाम किया

उनसे श्रीनगर जाने का संकल्प बताया। अतः आज्ञा मांगी। माता भवानी आर्शिवाद देकर कहती हैं कि आप जल्दी बिना रूके चलते जाना और साथ में कुछ किशमिश तथा नाबद लेते जाना। आज्ञा लेकर और नाबद, किशमिश साथ रखकर श्रीनगर की ओर प्रस्थान किया। श्रीनगर पहुँचने पर उसकी नज़र कुछ लोगों के ले जा रही अर्थी पर पड़ी। नन्दराम ने जानकारी हेतु उनसे पूछा कि किसका निधन हुआ है। आप किसकी अर्थी ले जा रहे हैं। प्रत्योतर उन्होंने कहा कि यह रूपभवानी नामक महान तपस्विनी की अर्थी है जो अन्तर्धयान हो गईं हैं। यह सुनकर नन्दराम ने विरोध करके कहा कि आप ऐसा असत्य क्यों कह रहे हो। मैं स्वयं आज प्रातः वासकुरा में उनका दर्शन करके आ रहा हूँ और उनकी आज्ञानुसार ही मेरे हाथ में यह नाबद और किशमिश पड़ा है। कुछ देर बाद ही फिर उसे सच्चाई का पूरा विश्वास होता है और उदास हो जाता है। फिर भी अपने को भाग्यशाली समझा कि उसे उनके प्रत्यक्ष दर्शन हुए।

3. माता रूपभवानी के सेवकों और भक्तों मं बाल जू दर का नाम सर्वोपर है। मूल अनपढ़ होते हुए भी विद्वान बना तथा उस समय दिल्ली सरकार में मंत्री पद तक पाया। वह दिल्ली में कुछ वर्ष पहले ही आ चुका था। श्रीनगर से दूर रहने के कारण उसको भवानी के अर्न्तध्यान होने की जानकारी न मिली थी। विशेषकर जब उस जामने में

सूचना के आदान प्रदान के सीमित साधन थे। इसके अतिरिक्त बाल जू दर माता का प्रिय भक्त भी था। ऐसे में रूपभवानी के अर्न्तध्यान होने के कुछ समय बाद ही भवानी दिल्ली के किसी स्थान पर प्रकट होती हैं और बाल जू दर से कुछ ज्ञान और आध्यात्मिकता की बातें करती हैं। इस बीच उसको अपना देह त्यागने का भी संकेत देती हैं। हालांकि वह समझ न पाया। समझे भी कैसे प्रत्यक्ष भेंट वार्ता हो रही है। खैर कुछ ही दिनों के बाद बाल जू दर श्रीनगर से माता के अंर्तध्यान होने की सूचना प्राप्त हुई।

बाल जू काफी चकित हुआ और उदास भी। सोचा कि कितना दुर्भाग्य है कि उनसे खुल कर बात न कर सका इत्यादि। इस प्रकार यहाँ पर यही सिद्ध होता है वह रूपभवानी स्व्यं सर्वशक्तिमान शारिका के चमत्कार की एक झलक थी जो साधारण मानव के सामर्थ्य से अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

ऊपर जिन जिन प्रसंगों अथवा विषयों का आधार लेकर जो भी बातें मैंने प्रस्तुत की हैं उसे सम्भवतः सही निष्कर्ष निकलता है कि महानता या तथ्य छिपा नहीं रहता। यद्यपि वर्णो के जुड़े शब्दों से वर्णन करना कठिन है। रूपभवानी का जन्म चाहे भक्त अवतार हो या युगावतार पर वह अवश्य शारिका देवी का अंशरूप थी जिसमें न कोई सन्देह है न दो राय। शेष धारणा अपनी अपनी।



अन्त्तः इस पुस्तिका में भवानी के कुछ चुने हुए रहस्य उपदेश "वारव्" प्रस्तुत कर रहा हूँ। पढ़कर लाभ लीजिए।

1. लुत्र वित्र न आसा न गुत्री न बाशी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम
शयुम–थान वासी आदि सर्व मध्यम
जिता सन्यासी ब्यन–बिन्दु–नादी
अर्न्तमुखी दृष्टी निर्वान रहस्यतती परमगती।

2. न जाया न जन्मी दग्द्धकर्मकाण्डी
यथा शान्त–बस्मी अरूपा "स्वरूपम
सूह सर्वत्र–सुखी अदेहो समादि
अमोह सावदानं तथा निष्कल निराकार
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान रहस्य तती परमगती।

3. रूपाय ता यिह आयिय वरा
नरा निरा लम्बा रूप
कृपापर आनन्द जानवर ।
अवतार रूम रूम रूफ।

4. माता न पिता भ्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम एको केवलोहम
ग्वरू न चेला मन्त्रों न लीला
तथ युस अकेला पर ब्रह्म सोंह


Bhagavaan GopinathJee Trust
LIBRARY
Acc NO 2726
Date 2008.
Price
Udaiwala, Jammu

लेखक के अन्य प्रकाशनः

1 जीवन चरित रूप भवानी

2 भक्ति गीत

3 वेव (अंग्रेज़ी)

4 उपकार

मिलने का पताः
श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (पंजी०)
तीर्थ नगर, बोड़ी,तालाब तिल्लो, जम्मू

मुद्रकः
दुर्गा प्रिनटिंग प्रेस
जानीपुर, जम्मू
दूरभाष: 2533456, 9419795380